विषय - संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र
कादम्बरी - शुकनासोपदेश
गद्यांश व्याख्या

डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा
दिनांक - 31/8/2020

लतेव विटपकानध्यारोहति । गङ्गेव वसुजनन्यपि तरङ्गबुद्बुदचञ्चला ।

भावार्थ - (लतेव विटपकानध्यारोहति) लता की भाँति जो विटपों अर्थात् वृक्षों पर चढ़ जाती है। यह लक्ष्मी विटपों (नीच पुरुषों, वियें) पर आरूढ़ हो जाती है। ~~आठ वसुओं~~ (गङ्गेव वसुजनन्यपि तरङ्गबुद्बुदचञ्चला) आठ वसुओं की माता होते हुए भी लहरों और बुलबुलों से चञ्चल बनी, गङ्गा के समान यह लक्ष्मी धन की उत्पादिका होती हुई भी लहरों और बुलबुलों की भाँति चञ्चल है।

टिप्पणी

जिस प्रकार लता वृक्ष की शाखा पर चढ़ जाती है अर्थात् उसका आश्रय ग्रहण करती है, उसी प्रकार लक्ष्मी भी विटों अर्थात् लम्पटों व गुण्डों के पास चली जाती है। यहाँ विटप शब्द में श्लेष है - (1) विटप = वृक्ष की शाखा, (2) विट = कामुक,

Scanned with CamScanner

Date __/__/__ Page No.: ____

लम्पट, धूर्त। विटं पाति इति विटपः = विटों का सरदार मुख्य विट। अथवा नायक के सहायकों में एक विट नामक सहायक भी रहता है। विश्वनाथ ने विट का लक्षण इस प्रकार दिया है - "सम्भोगहीन सम्पद् विटस्तु धूर्तः कलैक देशज्ञः। वेशोपचार कुशलो वाग्मी मधुरो ऽथ बहुमतो गोष्ठ्याम्"॥ (सा०द०, ३.४१)।

विटप शब्द के साथ प्रयुक्त 'क' प्रत्यय स्वार्थिक है, अतः 'विटप एव विटपकः' इस विग्रह से दोनों का अर्थ समान है। यहाँ भी शब्द मात्र की समानता होने पर भी श्लेषगर्भ 'पूर्णोपमा' अलंकार माना जाएगा।

इसी प्रकार अगली पङ्क्ति में गङ्गा को लक्ष्मी का उपमान बनाया गया है। साधारण धर्म है 'वसुजननी अपि तरङ्ग बुद्बुद चञ्चला'। गङ्गापक्ष में 'वसुजननी' का अर्थ है आठ वसुओं की माता तथा लक्ष्मीपक्ष में अर्थ है सम्पत्तियों की जननी। गंगा तरंगों व बुलबुलों चञ्चल व अस्थिर है (तरङ्ग बुद्बुदैश्चञ्चला) तथा लक्ष्मी तरंगों और बुलबुलों के समान अस्थिर होती है। (तरङ्ग-बुद्बुदवत् चञ्चला)। इस प्रकार उपमान उपमेय के साधारण धर्म में शब्द मात्र की समानता है। दोनों पक्षों में श्लेष से अर्थ भिन्न हो जाता है, तथापि आलंकारिक यहाँ 'पूर्णोपमा' अलंकार को ही अंगी अलंकार मानते हैं। (उ० सा० द० पृ० २८७) वाक्य में प्रयुक्त 'अपि' शब्द की व्यञ्जना यह है कि आठ वसुओं (सम्पदाओं) की माता होते हुए भी चञ्चल बने रहना मातृत्व गौरव के सर्वथा विपरीत बात है।

"The butterfly counts not months but moments, and has time enough."—Rabindranath Tagor

Scanned with CamScanner

Date ___/___/_____ Page No.: _____

पदव्याख्या - विटपकान् - विटं विस्तारं पाति इति विटपः (विट+पा+क) विटप एव विटपकः (स्वार्थे कप्रत्ययः) तान्। लक्ष्मीपक्षे - विटपकान् कामुकान्। "विटपः पल्लवे पिञ्जे विस्तारे स्तम्ब-शाखयोः" (विश्वकोष)। अध्यारोहति - अधि+आ+रुह्+लट् प्र० पु० ए०। वसुजननी - वसूनां धनानाम् अष्टानां देवविशेषाणाञ्च जननी (ष० तत्पु०)। तरङ्गबुद्बुदचञ्चला - तरङ्गेषु बुद्बुदानि तरङ्गबुद्बुदानि (स० तत्पु०) तरङ्ग-बुद्बुदवच्चञ्चला (क० धा०)। पक्षे - तरङ्गबुद्बुदैः चञ्चला (तृ० तत्पु०)। इति।

Scanned with CamScanner